IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बाँका जिला में पर्यटन विकास : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 मनुजेन्द्र कुमार, माध्यमिक शिक्षक, भागलपुर (बिहार)

शोध सार : पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो अवकाश के क्षणों में मनोरंजन या आनंद उठाने, ज्ञानार्जन एवं नये अनुभवों की प्राप्ति के उद्देश्य से की जाती है। बढ़ते तकनीकी विकास, परिवहन एवं संचार के साधन, सीमित प्राकृतिक संसाधन एवं बढती जनसंख्या के दबाव के कारण किसी प्रदेश में पर्यटन का विकास अनिवार्य एवं अपेक्षित है। वर्त्तमान में पर्यटन एक उद्योग के रूप में उद्‌गमित हो रहा है। यह उद्योग महज सरल आर्कषक विज्ञापन नही, बल्कि एक गहन चिंतन युक्त उद्योग है जिसमें रोजगार सृजन की अपार संभावनाएँ हैं। बिहार जैसे पिछड़े राज्य खासकर बांका जिला में यदि पर्यटन केन्द्र को आधारभूत संरचनाओं से सुसज्जित कर दिया जाय तो न सिर्फ राज्य सरकार को बड़ी मात्रा में राजस्व की प्राप्ति होगी, बल्कि स्थानीय लोगों को कम लागत में रोजगार के अवसर भी प्राप्त होंगे।

संकेत शब्द : पर्यटन, विकास, उद्योग, रोजगार सृजन, राजस्व।

प्रस्तावना : 'पर्यटन' आंग्ल भाषा के `TOUR` शब्द का हिन्दी रूपांतरण है। इस शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के TORNUS शब्द से हुई है, जिसका अर्थ LATHE और WHEEL होता है, अर्थात, पर्यटन का अर्थ 'चक्कर लगाना' या 'परिभ्रमण करना' है। इसे देशाटन, पर्यटन, परिभ्रमण, भ्रमण, गमनागमन सदृश अनेक पर्यायवाची शब्दों से भी संबोधित किया जाता है। इस प्रकार पर्यटन का अर्थ है–"घूमना फिरना, इधर–उधर भ्रमण करना, यात्रा करना, देश भ्रमण या देशाटन (भारती एवं प्रकाश)।" इस प्रकार पर्यटन फुरसत या अवकाश के क्षणों में की जाने वाली वह क्रिया है जिसमें अनेक प्रकार के सामाजिक–व्यापारिक समूह मिलकर काम करते हैं, जिससे पर्यटक और वहाँ के मूल निवासी दोनों के अनुभव अधिक प्रामाणिक और महत्वपूर्ण बन जाते हैं। पर्यटन, परस्पर सूचना, ज्ञान, संस्कार और परंपराओं के आदान–प्रदान में सहायक होता है। इससे दोनों को ही व्यापार और आर्थिक विकास के अवसर मिलते हैं।

अध्ययन के उद्देश्य : बांका जिला बिहार राज्य के दक्षिणी–पूर्वी भाग में अवस्थित सांस्कृतिक विरासत से समृद्ध तथा हिन्दु, जैन तथा इसाई धर्मों से संबंधित अनेक धर्म स्थलों (मंदिर, मस्जिद, गिरिजाघर), अनेक नैसर्गिक एवं मनमोहक प्राकृतिक छटाओं से अभिभूत पहाड़ियाँ, जलप्रपात, उच्छलिकाएँ, बाँधें, मनोहर वन–उपवन, जो संभावनाओं से भरपूर पर्यटन स्थल प्रदान करते हैं। इन संभावनाओं के होते हुए भी यह क्षेत्र सदियों से अविकसित, उपेक्षित एवं पिछड़ा है। पर्यटन उद्योग को विकसित कर इस क्षेत्र के निवासियों की आर्थिक समृद्धि एवं उन्हें विकास के मार्ग पर अग्रसर करना इस शोधकार्य का मुख्य उद्देश्य है। इस संदर्भ में इस प्रदेश से संबंधित कुछ ऐसे अहम् प्रश्न है जिन्हें खोजने का प्रयास किया गया है।

- इस प्रदेश के ज्ञात पर्यटन स्थलों को सुविधा संपन्न बनाने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना
- इस क्षेत्र में स्थित पहाडी एवं पठारी क्षेत्रों में पिकनिक (वनभोज,वनविहार) स्थल को पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित करने के लिए सुविधाओं एवं कानून व्यवस्था के बारे में उचित संकेत प्रस्तुत करना
- इस क्षेत्र में स्थित अनेक ऐसे धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र है जो पूर्णतः छुपे हुए हैं जिन्हें विकसित कर बडी संख्या में पर्यटकों को आकर्षित करने हेतु सम्यक प्रस्ताव देना
- इस क्षेत्र के स्थानीय उत्पादों को राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय पहचान देने हेतु अनुकुल योजना नीति प्रस्तुत करना

विधि तंत्र : इस अध्ययन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक विधियों को अपनाया गया है। आँकड़ों के संकलन एवं सर्वेक्षण में अनुसूची, प्रश्नावली एवं प्रतिदर्श सर्वेक्षण को सम्मिलित किया गया है, साथ हीं उसके विश्लेषण में गुणात्मक विधियों का अनुप्रयोग किया गया है। तथ्यों को स्पष्ट करने तथा आँकड़ों के प्रदर्शन हेतु यथोचित भौगोलिक विधि यथा. आलेख, आरेख, वितरण मानचित्र का प्रयोग किया जायेगा। मानचित्रांकण में यथासंभव अत्याधुनिक वैज्ञानिक तकनीकों एवं उपक्रमों का व्यवहार करते हुए उन्हें स्पष्ट, आकर्षक एवं स्वच्छ रूप से प्रस्तुत किया गया है। सभी आवश्यक आँकडों, तथ्यों एवं सूचनाओं को सारणीबद्व कर तालिकाओं द्वारा प्रस्तुत किया गया है। अध्ययन विधि क्रमबद्व सह.विश्लेषणात्मक है।

अध्ययन क्षेत्र : बिहार राज्य के दक्षिण–पूर्वी अनुभाग में अवस्थित बाँका जिला भागलपुर प्रमण्डल के अंतर्गत आता है। झारखंड राज्य की सीमा इस जिले को दो दिशाओं से परिसीमित करती है। 21 फरवरी 1991 ई0 को भागलपुर जिला से पृथ्क होकर स्वतंत्र जिले के रूप में अस्तित्व में आया। छोटानागपुर पठार एवं राजमहल उपत्यका तथा गंगा नदी के जलोढ़ मैदान का अनूठा समागम व प्रत्यक्ष दृष्टांत रखनेवाले इस जिले का कुल क्षेत्रफल 2020 वर्ग कि.मी. एवं कुल आबादी 20,34,763 (2011) है। जिसमें 10,67,140 पुरूष, 9,67,623 महिला एवं जनघनत्व 674 व्यक्ति प्रतिवर्ग कि.मी. है। उपोष्ण मानसूनी जलवायु रखनेवाले इस जनपद का अक्षांशीय विस्तार 24°30′00″ उत्तर से 25°09′00″ उत्तरी अक्षांश एवं देशांतरीय विस्तार 86°52′00″ पूर्व से 87°12′00″ पूर्वी देशांतर के मध्य है। 11 विकास खंड वाले इस जिले में 185 पंचायत तथा गाँवों की संख्या 2,111 है। चांनन, बरूवा, चीर, लोहारा, गेरूवा, सुखैनिया, बरवासन, डकाई आदि यहाँ की छोटी–बड़ी वर्षाती सरिताएँ हैं।

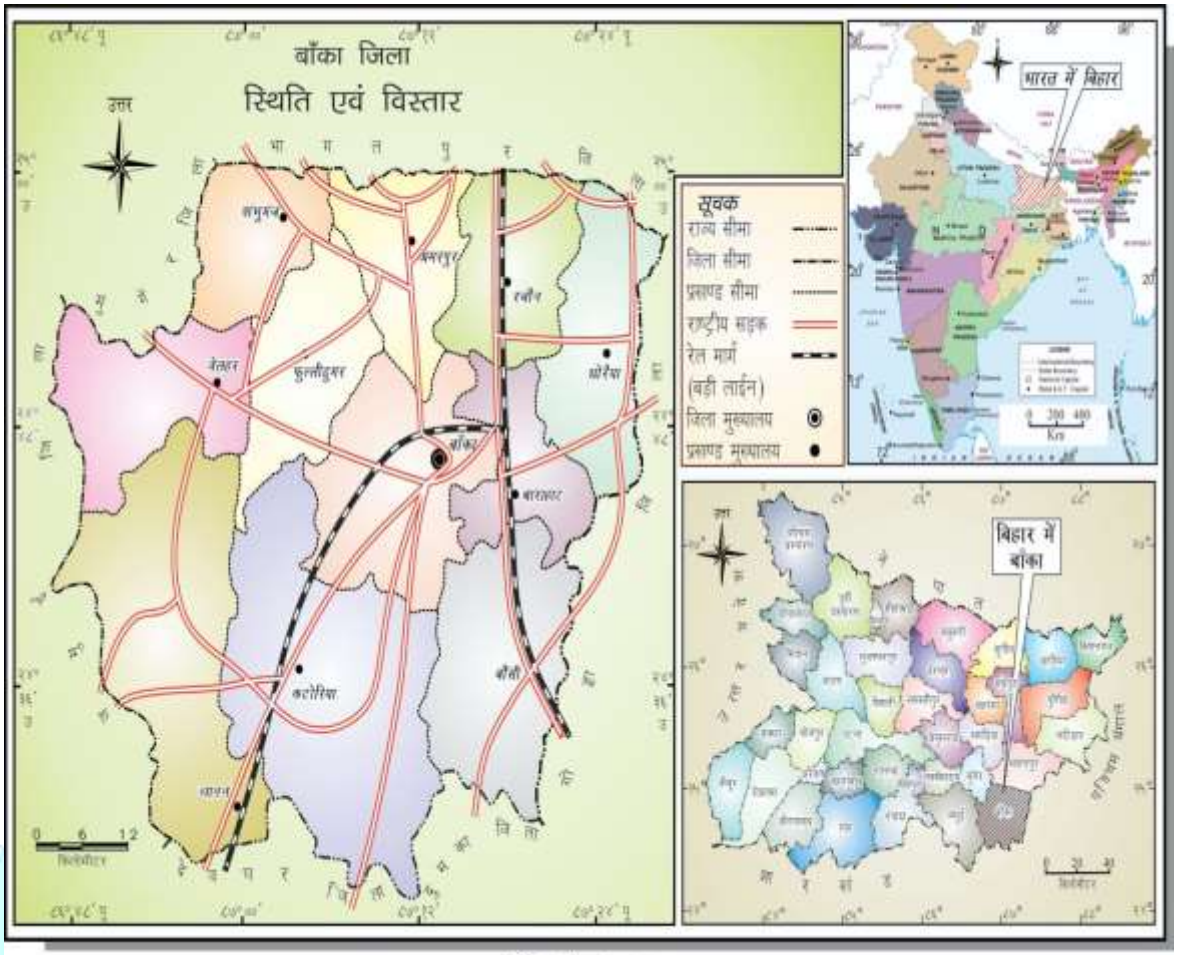

चित्र संख्याः 1.1

तालिका संख्या – 1

बाँका जिला (प्रशासनिक इकाई)					
क्र.सं.	प्रखंड का नाम	कुल क्षेत्रफल (वर्ग किमी में)	कुल जनसंख्या (2011)	पंचायतों की संख्या	गाँवों की संख्या
01.	शंभुगंज	179.79	1,73,974	19	186
02.	अमरपुर	175.01	2,01,351	19	177
03.	रजौन	197.54	1,97,601	18	207
04.	धोरैया	234.10	2,39,762	20	222
05.	बाराहाट	147.24	1,49,188	15	73
06.	बाँका	280.79	1,71,324	16	88
07.	फुल्लीडुमर	208.50	1,25,251	11	123
08.	बेलहर	236.65	1,67,719	18	172
09.	चाँनन	457.47	1,65,634	17	333
10.	कटोरिया	560.61	1,86,646	16	379
11.	बौसी	315.27	1,85,000	16	153

पर्वत, पठार, मैदान, एकाकी पहाड़ियाँ, वनाच्छादित भूमि का अनोखा दृश्यावली का समागम वाले इस जिले की भूगर्भिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि काफी प्राचीन है। आर्कियन, धाड़वार, जुरैशिक, टरशियरी एवं नूतन कालखंडों के भूगर्भिक क्रियाओं का सशक्त प्रमाण इस जनपद के धरातल पर दृष्टिगत होते हैं। सांस्कृतिक दृष्टि से यह जनपद अंगप्रदेश का अनुभाग है, किन्तु इस जिले के पूर्वी हिस्से में एकाकी पहाड़ी के रूप में मंदराचल के नाम से चर्चित रहा है, जो जैन एवं सनातन धर्मावलंबियों का पवित्र सिद्ध–स्थल के रूप में विराजमान है। इतना ही नही विश्व प्रसिद्ध श्रावणी मेला का कांवरिया पथ की सर्वाधिक लंबाई संजोये रखने का सौभाग्य इसी जनपद को प्राप्त है।

बांका जिला के प्रमुख पर्यटन स्थल :

दक्षिण के छोटानागपुर की सीमांत पहाड़ियाँ, वनाच्छादित भूमि, निर्झर सरिताएँ एवं झरने व उसमें निर्मित क्षिप्रिकाएँ, जलप्रपात, गुम्बदाकार पहाड़ियाँ के साथ–साथ साक्षात् उत्तर के समतल मैदान में द्वीप (टापू) की भांत्ति उपस्थित एकाकी पहाड़ियाँ आदि इस जिले में पर्यटन विकास की अपार संभावनाएँ लिए हुए हैं। इसे संजाने, संवारने एवं नियोजित करने की जरूरत है। इस जिले के प्रमुख पर्यटन केन्द्र निम्नवत है –

मंदार पर्वत – मंदार पर्वत न सिर्फ बाँका जिला वरन् दक्षिणी–पूर्वी बिहार एवं झारखंड राज्य का एक अनोखा पर्यटन केन्द्र है, जिससे हिन्दु, जैन एवं आदिवासी समुदाय के लोगों की अटूट आस्था जुड़ी है। बिहार–झारखंड के सीमावर्ती भाग के पास अवस्थित यह पर्यटन केन्द्र प्राकृतिक सौन्दर्य, धार्मिक आस्था एवं पौराणिक रहस्यों के लिए मशहुर है। हिन्दु धर्मावलंबी के लोगों की आस्था सुर–असुर के द्वारा समुद्रमंथन में मथनी के रूप में मंदराचल (वर्त्तमान का मंदार पर्वत) की आस्था जुड़ी है, जबकि जैन धर्म के लोग भगवान वासुपूज्य के चरण पादुका की स्मृति स्वरूप इस स्थल को पवित्र तीर्थ के रूप में स्वीकार करते हैं। आदिवासी समुदाय के लोग इस पर्वत के तलहटी में अवस्थित पापहरणी कुंड में मकर संक्रांति के दिन स्नान करना एक पुनीत कार्य मानते हैं। इस प्रकार यहाँ वर्ष के प्रत्येक महीना में देशी–विदेशी पर्यटकों के आने–जाने का सिलसिला लगा रहता है। आवश्यकता इसके प्रचार–प्रसार, सुविधा–संपन्न एवं आकर्षक बनाने की है।

मंदार पर्वत प्रसिद्ध सर्वधर्म सम्भाव का प्रतीक एक ऐतिहासिक सह धार्मिक पर्यटन केन्द्र है। भागलपुर नगर से 48 कि.मी. दक्षिण भागलपुर–देवघर–दुमका राज्यमार्ग संख्या–19 पर अवस्थित यह बौसी (बासुकी) प्रखंड में महराना हाट से 2.50 कि.मी. पूरब दिशा में अवस्थित है। समद्रतल से 700–900 फीट की ऊँचाई वाले यह स्थान अनेक भूगर्भिक रहस्यों से भरा–पड़ा है। वास्तव में एकाकी पर्वत के रूप में विद्यमान इस पर्वत का वर्त्तमान स्वरूप काफी घिसी–पिटी एवं विरूपित हो चुकी है। पूर्ण रूप से एक ही शिलाओं (ग्रेनाइट) द्वारा निर्मित इस पर्वत की भूगर्भिक कहानी निश्चित रूप से जुरैसिक काल में उत्सर्जित राजमहल नामक ज्वालामुखी उद्‌गार से संबंधित है (दूबे वृजेन्द्र, 2017)। भले ही लंबे काल से भूगर्भिक क्रियाओं एवं अनावृत्तिकरण के अनवरत प्रभाव के कारण यह अलग–थलग पड़ गया है। वर्त्तमान में इस पर्वत का तलहटी अनेक शिलाखंडों में विभक्त हो चुका है, जो विभिन्न प्रकार के वनस्पतियों से आच्छादित है।

वेद–पुराण एवं धार्मिक ग्रंथों में इस बात का उल्लेख है कि यह पर्वत हिन्दु, जैन एवं आदिवासियों की सफा संस्कृति के आस्था का पवित्र केन्द्र है। हिन्दु धर्म के मान्यता के अनुसार, प्राचीनकाल में सुर एवं असुरों के सामूहिक प्रयास एवं श्रम से समुद्र का जो मंथन हुआ था उस दौरान मथानी के रूप में मंदार पर्वत तथा रस्सी

के रूप में बासुकी नामक रस्सी का प्रयोग किया गया था। वर्त्तमान समय में इस पर्वत की घिसी–पिटी आकृति के साथ–साथ एक ही कठोर शिला (ग्रेनाइट) द्वारा निर्मित पहाड़ी इस बात का साक्षी है। स्कंधपुराण में इस पर्वत की महिमा का वर्णन चार धामों–द्वारिकापुरी, जगन्नाथपुरी, चंद्रिकाश्रम एवं मंदार। इन चारों तीर्थ स्थानों में मंदार तीर्थ रहस्य से भरा–पड़ा है। इस रहस्य को आज तक न तो किसी ने जाना और न ही इसके तह में जाने की कोशिश की। हिन्दु धर्म में इस स्थान के महिमा की चर्चा विष्णु पुराण में भी वर्णित है। इस मान्यता के अनुसार जो भी श्रधालु मकर संक्राति के दिन इस पर्वत के तलहटी में अवस्थित पापहरणी नामक तालाब में स्नान कर लेते हैं वे समस्त सांसारिक पापों से मुक्त हो जाते हैं और उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति होती है (कुमार आशीष, 2006)। इन्हीं मान्यताओं के कारण प्रतिवर्ष मकर संक्राति के अवसर पर यहाँ 15–30 दिनों का मेला आयोजित किया जाता है, जहाँ बड़ी संख्या में स्थानीय के साथ–साथ अन्य क्षेत्रों से भी श्रधालु आते हैं। इस तालाब के संदर्भ में एक और मान्यता यह है कि इसकी रचना दक्षिण प्रांत के चोल वंशीय राजा छत्रसेन ने करवाया था। मान्यता यह है कि राजा कुष्ट रोग से पीड़ित थे किन्तु मकर संक्राति के दिन इसी तालाब में स्नान करने के पश्चात् रोगमुक्त हो गए। इस बात का उल्लेख विष्णुपुराण में भी मिलता है कि जिसमें इस पर्यटन स्थल को भगवान विष्णु अर्थात् मधुसूदन, परशुराम और कृष्ण आदि भगवान विष्णु के ही विभिन्न रूप का दर्शन होता है (कुंदन आशुतोष कुमार, 2006)। पर्वत के तलहटी से चोटि तक के मध्य में सीताकुंड, शंखकुंड व चोटि पर श्री हरि मंदिर का मिलना इस बात की पुष्टि करता है। इसके अतिरिक्त भी इस पवित्र तीर्थ–स्थल में कठोर शिलाओं पर अनेक देवी–देवताओं की मूर्तियों उकेरी हुई मिलती हैं जिसमें भैरोबलि मंदिर, महादेव मंदिर, साधु–संतों का आश्रम, काशी विश्वनाथ मंदिर आदि की उपस्थिति हिन्दु धर्म के प्रति आस्था का द्योतक है।

इस स्थान के पवित्रता व आस्था आदिवासी समुदायों से भी जुड़ी हुई है। वस्तुतः यह स्थान बिहार एवं झारखंड की सीमा से काफी निकट है। इसके दक्षिण एवं पूर्वी भाग में बड़ी संख्या में आदिवासी समुदाय के लोग निवास करते हैं। मकर संक्रांति के अवसर पर यहाँ लाखों की संख्या में आकर श्रधालु इस पापहरणी कुंड में स्नान कर अपने इष्ट देवता का दर्शन करते हैं।

इस धार्मिक पर्यटन केन्द्र का महत्व हिन्दु धर्म के साथ–साथ जैन धर्मावलंबियों में भी काफी अटूट है। ऐसी मान्यता है कि इस पहाड़ी के सर्वोच्च शिखर पर जैन धर्म के 12वें तीर्थकर भगवान वासुपूज्य का पद चिन्ह विराजमान है। जिसका दर्शन करने हेतु बड़ी संख्या में प्रतिवर्ष विदेशी श्रधालु पर्यटक आया करते हैं। हालांकि इस पदचिन्ह के संदर्भ में हिन्दु धर्मावलंबियों के अनुसार यह पद चिन्ह भगवान राम अथवा विष्णु का है।

इस प्रकार स्पष्ट है कि मंदार पर्वत पर्यटन की दृष्टि से बहुआयामी महत्व रखता है। इसके बावजूद इसका अपेक्षित विकास नही हो पाया है। पर्यटक के मूलभूत आवश्यकताओं का समुचित व्यवस्था करने की जरूरत है।

तिलडीहा मंदिर – बांका जिले के शंभुगंज प्रखंड में अवस्थित एक सुप्रसिद्ध शक्तिपीठ नामक पवित्र एवं मशहूर धार्मिक तीर्थस्थल है। यद्यपि यह प्रशासनिक दृष्टि से भले ही बांका जिले के शंभुगंज प्रखंड के अंतर्गत हरवंशपुर गाँव में आता है किन्तु उनकी अवस्थिति मुंगेर जिले के तारापुर प्रखंड मुख्यालय से 1.50 कि.मी. पूरब बरूवा नदी के दाहिने स्कंध पर है। वर्त्तमान में नवनिर्मित कांवरिया पथ इसी सिद्धपीठ के पश्चिम दिशा से होकर गुजरी है। इस सिद्ध स्थल की स्थापना आज से लगभग 400 वर्ष पूर्व 1603 ई0 में पश्चिम बंगाल राज्य के

शांतिपुरा (वर्त्तमान में नदिया) जिले के अंतर्गत तालपोशा ग्राम निवासी हरिबल्लभ दास नामक शक्ति के पुजारी द्वारा तांत्रिक विधि से 108 नरमुंड पर बरूवा नदी के किनारे असमशान घाट में किया गया था। इसी कारण इस गाँव का नामाकरण हरवंशपुर किया गया।

तिलडीहा के नामाकरण के संदर्भ में वहाँ के स्थानीय निवासियों की मान्यता है कि इस क्षेत्र के आस–पास के भूमि में बड़े पैमाने पर तिल (Oil Seed) की खेती हुआ करती थी। इसी कारण इस स्थान का नामाकरण तिलडीहा किया गया। वर्त्तमान में इस शक्तिपीठ की पूजा–अर्चना हरिवंश दास जी के ही परिवार के मेढ़पति दास जी के अधीनस्थ है तथा यह अनुक्रमिक रूप से हस्तांतरित उसी परिवार के उत्तराधिकारी को होते चला आ रहा है।

जेठौरनाथ मंदिर – अमरपुर–बांका मार्ग पर इंगलिश मोड़ से लगभग 02 कि.मी. पूरब दिशा में चांदन नदी के बांए स्कंध पर अवस्थित जेठौरनाथ मंदिर जिले का एक प्रमुख ऐतिहासिक व धार्मिक पर्यटन केन्द्र है। अनुपम प्राकृतिक छटाओं से युक्त इस मंदिर के एक तरफ पश्चिम में पहाड़ों की श्रृंखला है, वहीं दूसरी ओर पूरब में चांदन नदी देवादिदेव महादेव के पैर पखारती है। वास्तव में यह स्थान शैव, शाक्त और वैष्णवों का संगम स्थल है। मंदिर परिसर में भगवान विष्णु का चरणपादुका विराजमान है, जिसपर अज्ञात भाषा में संभवतः मंदिर के उदभव और विकास से संबंधित कहानी लिपिवद्ध है। साथ ही उत्तरी–पूर्वी कोने में माता श्यामा की प्रतिमा भी विराजमान है। इतिहासकारों की मान्यता है कि जेठौरनाथ मंदिर, बाबा वैद्यनाथ धाम व बासुकीनाथ धाम से भी प्राचीन है। इस मंदिर में भगवान शिव की एक अदभुत प्रतिमा भी है, जो मुख्य मंदिर के उत्तर में स्थित लक्ष्मी–नारायण मंदिर स्थापित है। पुरातत्ववेता सतीश कुमार के अनुसार यह एकमुखी शिवलिंग शशांक गौर के शासनकाल का है, जो लगभग 14 सौ साल पुराना है।

स्पष्ट है कि नदियों व पहाड़ों की उपस्थिति के कारण ज्येष्ठगौर नाथ महादेव मंदिर (जेठौरनाथ मंदिर) की आकर्षकता में चार चांद लग जाती है। किन्तु बुनियादी सुविधाओं के अभाव के कारण स्थानीय पर्यटको को छोड़कर दूर–दराज क्षेत्र के लोग यहाँ आने से कतराते हैं। अगर यहाँ पर उचित आवश्यक सुविधा उपलब्ध करा दिया जाय तो न सिर्फ इस स्थान को विशेष पहचान मिल पाएगी वरन् स्थानीय लोगों को रोजगार भी मिल पाएगा।

भलजोर – बांका तथा गोड्डा (झारखंड) जिला के सीमावर्ती भाग में अवस्थित भलजोर नामक स्थान प्राकृतिक दृश्यावलियों एवं मनमोहक छटाओं से परिपूर्ण एक बहुत ही आकर्षक पारिस्थितिकीय पर्यटन केन्द्र सह वनभोज स्थल है। वास्तव में भूगोल एवं भू–विज्ञान के छात्रों एवं शोधकर्त्ताओं के लिए यह एक दर्शनीय स्थल है। यहाँ ग्रेनाइट एवं क्वार्टजाइट की घिसी–पिटी शिलाएँ, गुम्बदाकार पहाड़ियाँ, कटी–फटी घाटियाँ, वनाच्छादित भूमि एवं बलखाती भलजोर नदी अवस्थित है जो यहाँ की दृश्यावलियों को मनमोहक बना देती है। साथ ही साथ इस क्षेत्र के प्राचीनतम भूगर्भिक इतिहास का दृष्टांत प्रस्तुत करती है। वर्षाकाल के दौरान इस क्षेत्र का प्राकृतिक सौन्दर्य में अनायास ही वृद्धि हो जाती है। यहाँ पर कुछ विशेष अवसरों खासकर नववर्ष के प्रथम दिन, मकर संक्रान्ति व छुट्टियों के दिनों में वनभोज मनाने के लिए बड़ी सेख्या में निकटवर्ती क्षेत्र के पर्यटक आया

करते हैं। भागलपुर जिला से 60 कि.मी. भागलपुर–हंसडीहा–दुमका राज्यमार्ग पर स्थित इस पारिस्थितिकीय पर्यटन केन्द्र पर आज भी बुनियादी सुविधाओं का पूर्णतः अभाव है।

लक्ष्मीपुर डैम – बांका जिले के बौसी प्रखंड के अंतर्गत वादियों एवं वनाच्छादित भूमि से युक्त एक बहुत ही मनोरम पारिस्थितिकीय पर्यटन केन्द्र है। चूँकि इसे चांदन नदी को बाँधकर बनाया गया है इसलिए इसं चांदन डैम के नाम से भी पुकारा जाता है। बांका जिले के बौसी प्रखंड मुख्यालय से करीब 15–16 कि.मी. दक्षिण–पश्चिम दिशा में अवस्थित यह डैम 1968 ई0 में बनकर तैयार हो गया था। कंक्रीट द्वारा निर्मित इस बाँध की लंबाई 1,555 मीटर तथा ऊँचाई 40.40 मीटर है। इस बाँध के नीचे का दृश्य बहुत ही आकर्षक एवं मनमोहनेवाली है। यहाँ क्वार्ज एवं क्वार्टजाइट की चट्टानें और उसके साथ जल की तीव्र प्रवाह कदाचित बिहार में भाखड़ा–नांगल, मैथन एवं पंचेत की दृश्यावली प्रस्तुत करता है। किन्तु इस बात का खेद है कि इतने मनोरम और आकर्षक दृश्यावलियों को संजोये रखने के बावजूद बिहार सरकार एवं पर्यटन विभाग का कोई घ्यान पर्यटकों को आकर्षित एवं आमंत्रित करने की ओर नही जाता है। यहाँ का एकांत वातावरण एक्के–दूक्के आनेवाले पर्यटकों के दिमाग में हमेशा भय की आशंका को घेरे रहता है।

हनुमना डैम – बांका एवं मुंगेर जिले के सीमा पर प्रवाहित बरूवा नदी पर निर्मित हनुमना डैम बांका जिला ही नही बल्कि पूर्वी बिहार का एक व्यापक महत्व रखनेवाला पारिस्थितिकीय पर्यटन केन्द्र है। इसके पूर्वी तरफ एक विशाल जलाशय है जिसकी पूर्वी सीमा जिलेविया मोड़ से आगे लगभग 10 कि.मी. तक कांवरिया पथ निर्धारित करती है तथा जलाशय की सुंदरता एवं महत्ता अनायास ही कांवरियों का ध्यान अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है। 1965 ई0 में बनकर तैयार इस डैम की लंबाई 457.32 मीटर तथा ऊँचाई 56.66 मीटर है। डैम के उत्तरी–पूर्वी हिस्से में अत्यंत शीतल जल की एक निर्झर झरना है जिसका जल सुपाच्य एवं कष्टहरणी के रूप में जाना जाता है। यहाँ पर विभिन्न बुनियादी सुविधाओं को व्यवस्थित कर पर्यटन केन्द्र के रूप में विकसित एवं चिन्हित करने की जरूरत है।

ओढनी डैम – बांका जिला मुख्यालय से लगभग 12 किलोमीटर दूर स्थित ओढनी डैम एक नया पर्यटन स्थल है, जहां नदी तथा डैम के खुबसुरती का नजारा एक साथ लिया जा सकता है। बांका शहर से कटोरिया रोड के रास्ते कटेली मोड़ के पास से सीधे एक सड़क ओढनी डैम को जाती है, जहां पहुंचकर गोवा वाली मस्ती का आनंद उठाया जा सकता है। कभी नक्सलियों के शरणस्थली के रूप में प्रसिद्ध ओढनी डैम आज पर्यटकों का मुख्य आकर्षण केन्द्र बन गया है। यहां मोटरबोट, स्पीड बोट और जेट स्कीइंग से लेकर एडवेंचर वाटर स्पोर्ट्स के अलावा डैम के बीचो–बीच आइलेंड पर रिसॉर्ट जैसी व्यवस्था किया जा रहा है। पर्यटन के दृष्टिकोण से यह एक बेहतरीन जगह है जहां खाने–पीने की चीजों से लेकर पार्किंग की उचित व्यवस्था किया गया है।

ओढनी डैम एक पिकनिक स्पॉट से कम नही है जहां रोजाना सैकड़ों लोग यहां आकर भरपूर आनंद उठाते हैं। हालांकि सुरक्षा के दृष्टिकोण से पर्यटक शाम होते ही अपने–अपने गंतव्य स्थान को चले जाते हैं।

पर्यटन विकास में बाधाएँ एवं संभावनाएँ :–

बाँका जिला प्राकृतिक विवधताओं से भरा क्षेत्र है तथा पर्यटन उद्योग के विकास की अपार संभावनाएँ है। जिले में पर्यटन विकास हेतु सुनियोजित विकास की जरूरत है। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के तहत जिले में पर्यटन विकास का कार्य चल रहा है। राज्य सरकार ने बांका जिला के पर्यटन स्थल के विकास एवं संरक्षण का आश्वासन दिया है।

बाँका जिला में पर्यटन विकास तो हो रहा है पर बाधाएँ भी है जो निम्नलिखित है :–

1. पर्यटन से संबंधित बुनियादी सुविधाओं का सर्वथा अभाव
2. केन्द्र सरकार, राज्य सरकार एवं स्थानीय निकायों द्वारा प्रदत्त राशियों की खानापूर्ति
3. कानून व्यवस्था का अभाव एवं असुरक्षित माहौल
4. त्वरित परिवहन एवं संचार सेवाओं का अभाव
5. प्रचार–प्रसार व विज्ञापन की कमी
6. प्रशिक्षित गाइड एवं टूर ऑपरेटर्स की कमी

उपरवर्णित बाधाओं का निराकरण करने उपरांत बांका जिला में पर्यटन उद्योग को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे जिले का पहचान न सिर्फ राज्य स्तर पर बल्कि राष्ट्र स्तर पर भी हो सकेगा।

निष्कर्ष :–

निष्कर्षतः हम कह सकते है कि बाँका जिला में अनेकों पर्यटन केन्द्र अवस्थित है, जहाँ प्रतिवर्ष हजारों की संख्या में पर्यटक आया करते हैं। जिससे यहाँ के स्थानीय लोगों को रोजगार तो मिलता ही है साथ ही साथ राजस्व की भी प्राप्ति होती है। वुनियादी सुविधाओं का उचित प्रबंध, सुरक्षा व्यवस्था, परिवहन के साधन, प्रशिक्षित गाइड एवं टूर ऑपरेटरों की उपलब्धता, ऑनलाईन बुकिंग आदि को बढ़ावा देकर यहाँ पर्यटन उद्योग को विकसित किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ :–

1) भारती गुंजन एवं प्रकाश रश्मि, 2016 :– भागलपुर जिले में पर्यटन विकास की संभावनाएँ (JOURNAL OF INTEGRATED DEVELOPMENT AND RESEARCH, VOL-06, NO:1,JUNE)

2) कपूर डॉ विमल कुमार (2008) :– पर्यटन भूगोल, विश्व भारती पब्लिकेशन, नई दिल्ली

3) गोयल राजेश :– भारतीय पर्यटन उद्योग, वन्दना पब्लिकेशन, नई दिल्ली

4) दूवे वृजेन्द्र, 2017 :– दैनिक समाचार पत्र प्रभात खबर, मैं भागलपुर हूँ विशेषांक, दिसंबर 2017।

5) कुमार आशीष, 2006 :– दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण, 'रहस्य से भरा है मंदार' नामक फीचर परिशिष्ट, दिनांक 14 जनवरी 2006।

6) कुंदन आशुतोष कुमार, 2006 :– दैनिक समाचार पत्र दैनिक जागरण, 'सजकर तैयार है

बौंसी मेला' नामक फीचर परिशिष्ट, 14 जनवरी 2006।

7) आधुनिक बिहार का भौगोलिक स्वरूप, 2012 :–प्रो. गिरिजा नंदन सिंह

8) प्रताप राणा, 2008 :– पर्यटन भूगोल, युनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली

9) प्रसाद कमला एवं सरकार प्रसेन्जित, 2014 :– टूरिज्म इन झारखंड, राजेश पब्लिकेशन